दूरदर्शन में हिन्दी का भाषाई स्वरूप

डॉ0 विनोद कुमार *

भाषा स्वयं में एक बहुआयामी व्यवस्था है जिसका मुख्य प्रकाय संप्रेषण है। उसका संप्रेषण तत्व विविधता से भरा हुआ है। उसकी यह विविधता उसे गत्यात्मकता और जीवंतता भी प्रदान करती है जो नवीनता का उत्स है। इसकी नवीनता, इसके नवीन शब्द, पद, पदबंध और वाक्य प्रयोगों के रूप में दिखती है। यह नवीन प्रतीकात्मकता, बिम्ब विधान, अग्रप्रस्तुति और विचलनों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है तथा भाषा के सामाजिक प्रकार्यों को आगे बढ़ाते हुए जीवन की आवश्यकता के वैविध्य के अनुरूप अपना स्वरूप पुष्पित–पल्लवित करती है। आधुनिक काल जनसंचार माध्यमों तथा संचारी क्रांति का रहा है तथा भाषा के लिहाज से भी यह सदी भाषा के नवनवोन्मेषशाली रूपों तथा शैलियों की प्रवर्तक रही है। समय के साथ जनसंचार के माध्यम तथा उनके भाषाई प्रयोग के बहुआयामी स्वरूप का साक्षात्कार हुआ। इस नवीन भाषाई संसार का संवाहक बना दूरदर्शन माध्यम। दृश्य–श्रव्य माध्यमों में सर्वाधिक विस्तार वाला माध्यम दूरदर्शन (टेलीविजन) माध्यम है, जिसका वर्तमान भाषाई फलक सबसे व्यापक है। इसकी भाषा का विस्तृत आयाम, इसकी विविध प्रयुक्तियों के हिसाब से अपना दायरा तय करती हैं। यह वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित हिन्दी का अधुनातन रूप है।

वर्तमान समय में इस माध्यम की भाषा, इसका भाषाई सौन्दर्य, इसके मुहावरे, इसकी शैली इसका रूप, प्रत्येक स्तर पर बहुत परिवर्तन हुए हैं। इसने प्रभावोत्पादकता और मनोरंजन का नया संसार गढ़ा है जिसके कारण आज का प्रत्येक आयु वर्ग, इसके मोहपाश में आबद्ध है। ज्ञान–विज्ञान के अपूर्व विकास–विस्तार तथा भूमण्डलीय युग के एकीकृत विश्व में, अबतक उपलब्ध समस्त भाषिक, शैक्षिक, ज्ञानात्मक, विज्ञानात्मक, सूचनात्मक एवं समस्त अन्य उपलब्धियों के सार्वभौमिक संचरण–संप्रेषण ने हिन्दी को भाषाई प्रयुक्तिपरक समृद्धि प्रदान की है। इसके नए रूप और भंगिमाओं ने इसे, इसके नए कलेवर के साथ भारत ही नहीं, अपितु वैश्विक लोकप्रियता प्रदान की है। इस माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता इसका रूप, रंग, ध्वनि, एवं संगीत की भाषिक प्रयुक्ति की संश्लिष्ट योजना है। प्रो0 दिलीप सिंह के शब्दों में ''भाषा के भीतर उसकी अकूत सर्जनात्मक शक्ति छिपी हुई है। पर यह जरूरी नहीं कि उसके हर प्रयोक्ता में उसे पहचानने और इस्तेमाल

करने की क्षमता समान हो।'' दृश्य–श्रव्य माध्यमों ने हिन्दी की इस सर्जनात्मक क्षमता को पहचाना और उसका भरपूर दोहन किया जिससे हिन्दी निखरी भी और बिखरी भी। दूरदर्शन के इस विशिष्ट भाषाई संसार को समझने के लिए उसके भाषिक तत्वों को समझना आवश्यक है।

''अग्रप्रस्तुति की अवधारणा गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आकृति भूमि संबंधी विरोधिता की अवधारणा पर आधारित है।'' इसके अनुसार पृष्ठभूमि के आलोक में अग्रप्रस्तुति अलग से उभरकर समक्ष उपस्थित हो जाती है और वह इस तरह प्रभावशाली हो उठती है कि प्रथम प्रत्यक्षीकरण में ही अपना महत्व सिद्ध कर जाती है। हैव्रनेक ने इसे परिभाषित किया है ''अग्रप्रस्तुति से हमारा आशय भाषा के कौशलों के ऐसे व्यवहार से है जो ध्यान आकर्षित करे और असामान्य रूप से प्रत्यक्षीकृत हो उठे।''

अपरिचयीकरण–शैली की इस अवधारणा का प्रतिपादन रूपवादी चिंतक विक्टर स्क्लोवस्की ने किया था। विविध कार्यक्रमों, चाहे वह विज्ञापन हो अथवा समाचार अथवा कोई अन्य प्रयुक्ति, उसमें समय–समय पर किए जाने वाले भाषाई, अथवा दृश्यात्मक परिवर्तन, अपरिचयीकरण के ही रूप हैं। विविध चैनलों, समाचार कार्यक्रमों आदि के संगीत, ध्वनि–प्रभाव तथा दृश्य–विधान के साथ, ग्राफिक प्रभावों का परिवर्तन इसी अपरिचयीकरण का प्रभाव है, जो हमारा ध्यान उनके प्रति आकर्षित करता है।

अजनबीकरण–अजनबीकरण की अवधारणा के विचारक महान नाटककार बर्टोल्ड ब्रेख्त हैं। इस अवधारणा के तहत, ऐसा प्रभाव उत्पन्न करना जिससे वह वस्तु अथवा भाषा कहीं और की लगे। उसमें अपनापन अथवा किसी भी तरह का जाना–पहचानापन प्रतीत न हो। इस शैली की विशेषता सुबोध को भी दुर्बोध बना कर प्रस्तुत करना है। इसका प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य तथा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए होता है। उदाहरण के लिए–**'पीके' फीचर फिल्म** में सामान्य सामाजिक प्रसंगों को एक एलियन के माध्यम से दिखाना।

मनोवैज्ञानिक एकाग्रीकरण–मनोवैज्ञानिक एकाग्रीकरण की अवधारणा, प्रयुक्तियों के उस रूप से संबंधित हैं जहाँ कुछ ऐसे तत्व उपस्थित होते हैं जो दर्शकों का अवधान संयोजित कर लेते हैं। इसके दो तत्व हैं–**पहला एकाग्रीकरण तथा दूसरा केंद्रबिंदु**। इसमें एकाग्रीकरण क्रिया का कर्म रूप है केंद्रबिंदु। इसमें एकाग्रीकरण के अंतर्गत वे सभी तत्व अथवा प्रयास आते हैं, जो कि उत्पाद के प्रति अथवा कथ्य के प्रति ध्यान आकर्षित करें और उसकी स्मरणीयता दीर्घकालिक।

विचलन–भाषा के शैलीवैज्ञानिक अध्ययन हेतु विचलन की अवधारणा सर्वाधिक महत्वपूर्ण। जैसा कि शब्द ही अपने अर्थ का प्रतिपादन करने में समर्थ है–

'पारम्परिक मार्ग से वियुक्त' होना अथवा 'विचलित' होना। तात्पर्य यह कि भाषा के स्थापति सामान्य नियमों का अतिक्रमण करना ही विचलन है। पारिभाषिक रूप में कहा जाय तो 'भाषा के मानक प्रयोग से किया जाने वाला अतिक्रमण अथवा मानकों का उल्लंघन ही विचलन है।' इसका कारण, भाषिक प्रयुक्तियों में नवीनता, आकर्षण, स्मरणीयता और प्रभावोत्पादकता के साथ, भाषा–भावों की चामत्कारिक व्यंजना की आवश्यकता है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं "सामान्य भाषा केवल सामान्य अनुभव की अभिव्यक्ति करने में समर्थ होती है किन्तु, काव्य विशिष्ट अनुभव पर आधारित होता है, अतः काव्यभाषा को विशिष्ट अनुभव की अभिव्यक्ति करनी पड़ती है और इसलिए उसे विशिष्ट बनाना पड़ता है।" वास्तव में यह भाषा का सर्जनात्मक पक्ष है। सर्जनात्मकता नवीन विधानों का प्रयोग चाहती है। यह नवीनता, भाषा में अलंकारों, प्रतीकों, बिंबों, मुहावरों, कहावतों, कथनों आदि के प्रयोग तथा स्वरूप के स्तर पर आती है। विचलन के कई स्तर हैं जिसके आधार पर विचलन के विभेद स्थापित किए जाते हैं – **ध्वनि विचलन, संज्ञा विचलन, विषेषण विचलन, क्रिया विचलन, सहप्रयोग विचलन, मानक विचलन, अर्थ स्तरीय विचलन, वाक्य स्तरीय विचलन**।

प्रोक्ति व्यवहार–प्रोक्ति, एकाधिक वाक्यों का समुच्चय है जो कि एक सुव्यवस्थित इकाई के रूप में वक्ता के मंतव्य को अभिव्यक्ति दे सके। यह सामान्यतः ऐसी सुसम्बद्ध वाक्य श्रृँखला है जो एक पूर्ण स्पष्ट अर्थ प्रदान करती है। तात्पर्य यह कि एक से अधिक वाक्य जिनका स्वतंत्र अर्थ होते हुए भी वे समग्र रूप से एक ही अर्थ या भाव को संपुष्ट करते हैं। इसके सभी वाक्य अन्विति में अभिष्टार्थ का प्रतिपादन करते हैं। अभिव्यक्ति के स्तर पर व्याकरणिक मान्यता के अनुसार भाषा की पूर्ण एवं महत्तम इकाई के रूप में वाक्य की प्रतिष्ठा है, किन्तु वर्तमान भाषावैज्ञानिक आधार पर यह स्थान अब प्रोक्ति को प्राप्त हो गया है। इसकी यह उपलब्धि इसकी विशिष्ट संरचनात्मकता का परिणाम है जो इसमें वाक्य की अपेक्षा, अभिव्यक्ति को समग्र रूप में उद्धाटित करने की क्षमता प्रदान करता है। यह साहित्यदर्पणाकार, आचार्य विश्वनाथ के महावाक्य का ही पर्यायवाची है। इसे परिभाषित करते हुए हिन्दी के मुर्धन्य भाषाकार भोलानाथ तिवारी कहते हैं –"तर्कपूर्ण, क्रमयुक्त और आपस में आन्तरिक रूप से सुसम्बद्ध एकाधिक वाक्यों की ऐसी व्यवस्था को प्रोक्ति कहते हैं जो सन्दर्भ–विशेष में अर्थद्योतन की दृष्टि से पूर्ण हो।"

दूरदर्शन माध्यम में भाषिक इकाई के रूप में भाषेतर ध्वनि प्रयोग, अंग संचालन, भाव–भंगिमाएँ, विविध दृश्य एवं चित्र अनुप्रयोग, गीत–संगीत आदि समस्त होते हैं। अतः इसके संदर्भ में प्रोक्ति का अवधारणात्मक स्वरूप प्रयुक्तियों

के दृश्य बिंब एवं भाषिक–भाषेतर तत्वों का संगठित एवं सुसम्बद्ध समंजन होता है।

दूरदर्शन की भाषिक विशिष्टताएँ

हिन्दी का पिजिनात्मक एवं क्रियोलात्मक स्वरूप– भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, असमी, कोंकणी, मैथिली, मणिपुरी, मगही, ब्रज, राजस्थानी आदि कई क्षेत्रीय भाषाएँ प्रमुख हैं। स्थानीय बोलियों की तो अत्यधिक विविधता है। ऐसे में हिन्दी के संपर्क भाषा होने का प्रमुख कारण उसकी लचीली एवं गतीशील प्रकृति है। संपर्क भाषा के कारण ही भाषाओं के पिजिन तथा क्रियोल जैसी संकल्पनाओं का जन्म होता है। "बहुभाषिक प्रकृति वाले भाषा–समुदाय की आपसी सामाजिक तथा संप्रेषण व्यवहार की स्थितियों में पिजिन का जन्म होता है। इसमें एक भाषा आधार भाषा या स्रोत भाषा होती है जिसके भाषाई तत्व उस नवीन भाषिक प्रयुक्ति में सर्वाधिक अधिक होते हैं। इन भाषाओं का निर्माण व्याकरणिक नियमों के अतिक्रमण के मूल्य पर संप्रेषण सरोकारों की महत्ता पर होता है।" प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक हॉल के अनुसार–"आपसी संपर्क में आने वाले समुदाय जब एक दूसरे की भाषा सीखने या उसमें अभिव्यक्ति क्षमता हासिल करने में असमर्थता महसूस करते हैं, तब उन्हें पिजिन रूप की आवश्यकता पड़ती है।" हिन्दी में पिजिनात्मक भाषा रूप के दर्शन बम्बइया हिन्दी या कलकतिया हिन्दी या हिंग्लीस के रूप में देखने को मिलती है। इसमें मूल भाषिक तत्व तो हिन्दी के होते हैं किन्तु उसकी उच्चारण विधि एवं व्याकरणिक संरचना में वक्ता के भाषिक तत्वों का आधार होता है।–अरे! जयेठालाल, मैं तुमको कया बोलता, कि तुम अमारा वास्ते परेशान नईं होना।(दक्षिण भारतीय भाषाई उच्चारण शैली)

दूरदर्शन की संकर भाषा : कोड मिश्रण तथा कोड परिवर्तन– कोड' अर्थात 'भाषा',। यहाँ 'कोड' पद के प्रयोग का संबंध 'भाषा' पद का सार्वनामिक प्रतिस्थापन है।"कोड एक तटस्थ पारिभाषिक शब्द है जो संप्रेषण की उस किसी भी व्यवस्था को इंगित कर सकता है जिसमें दो या दो से अधिक वयक्ति सम्मिलित हैं।" प्रो0 दिलीप सिंह की उक्त परिभाषा से प्राप्त संकल्पना के अनुसार सामान्यतः सभी भाषाओं के लिए एक अन्यतम पद 'कोड' का चयन कर लिया गया है जो प्रत्येक भाषा या बोली के लिए एक तटस्थ, वैज्ञानिक अथवा तकनीकी पद है। उदाहरण के लिए – आप बहुत **'सेंटीमेंटल'** हैं। बहुत जल्दी **'यूज टू'** हो जाते हैं। इतना भी **'इमोशनल'** होना अच्छा नहीं। शहर में **'ट्रैफिक'** की समस्या बढ़ती जा रही है।

विभाषा का प्रयोग–भाषा के अत्यंत अल्प अंतर वाले विविध भाषिक प्रयोगों का एकीकृत प्रयोग विभाषा है। हिन्दी से मिलती जुलती भोजपुरी, मगही, अवधी, आदि भाषाएं थोड़े–बहुत अंतर के साथ एक दूसरे के समान हैं तथा एक भाषा का व्यक्ति दूसरी भाषा को समझ सकता है और आंशिक रूप से उसके मिश्रित स्वरूप का भी प्रयोग करता है, यह विभाषा प्रयोग का उदाहरण है।

मीडिया की नई हिंदी–दूरदर्शन माध्यमों में प्रयोग हो रही भाषा में यह प्रवषत्ति प्रबलता से दिखती है। उसमें भाषाओं की खिचड़ी मिलती है जिसका कोई स्वरूपात्मक मेल नहीं होता, केवल प्रयोक्ता के संप्रेषणात्मक संदर्भों का प्रभाव होता है। यह भाषा अनौपचारिक बातचीत की भी बानगी प्रस्तुत करती है जिसमें हिन्दी और इंग्लिश का खिचड़ी प्रयोग है। यह न तो कोड मिश्रण है और ना ही कोड परिवर्तन। क्योंकि भाषा की इस प्रयुक्ति के भी अपने नियम हैं। इसमें एक भाषा में दूसरी भाषा का वाक्यांश या उस दूसरी भाषा के व्याकरणिक तर्ज के भाषिक प्रयोग स्वीकार्य नहीं होते। यह भाषा का पिजिन और क्रियोल रूप भी नहीं है क्योंकि यहाँ न तो दो भाषाओं का सरलीकृत सम्मिश्रण है और न ही उनका मानकीकृत संरचनात्मक नवीन भाषिक प्रयोग। यह विशुद्ध संकर भाषा है जो द्विभाषिकता का बेमेल प्रयोग है।

कुछ फिल्मी गानों के बोलों को याद किया जाय तो –

– सीएटी कैट, कैट माने बिल्ली, आरएटी रैट, रैट माने चुहा

– रेन वाज फॉलिंग, छमाछम छम

– वन टू का फोर, फोर टू का वन, माई नेम इज लखन

– फर्स्ट टाइम देखा तुम्हें हम खो गयाकृकृमें लव हो गया

भाषा और लिपि का संक्रमित नवभाषाई प्रयोग–इस संबंध में असगर वजाहत जी ने अपने यहाँ एक बहस छेडी थी – "हिंदी को रोमन में लिखना प्रारंभ किया जाय।" दूरदर्शन में यह आम प्रयोग है। हिन्दी भाषा की बातें रोमन लिपि में तथा अंग्रेजी के वक्तव्य हिंदी में अनायास दिख पडेंगे। बॉलिवुड के अधिकतर कलाकारों के अभिनय से सम्बन्धित स्क्रिप्ट रोमन लिपि में ही होते हैं।

नई लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रचलन–दूरदर्शन ने भाषायी स्तर पर सर्जनात्मकता के नए प्रतिमान गढ़े हैं। आलंकारिक भाषा के साथ अभिव्यक्ति की नवीन शैली रचा है। इसी प्रकार नए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का शब्दसंसार भी गढ़ा है। उदाहरण के लिए एक धारावाहिक इच्छाप्यारी नागिन के नए मुहावरों को देखा जा सकता है–**खाली दिमाग, नेवले का घर, माँ का जहर पिया है तोकृ.।**

इस तरह के भाषा कोडों का मिश्रित प्रयोग, प्रयुक्ति के नवसंसार का सष्जन करता है। किन्तु नवीनता का यह सृजन भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक

संदर्भों से दूर होता चला जाता है। दूरदर्शन की विविध प्रयुक्तियों में इसके तीव्र संक्रमण का दर्शन भी होने लगा है। भारत की अत्याधुनिक भाषा हिन्दी, नवप्रवर्तनों को अपनाती हुई भारतीय समाज की ज्ञान–विज्ञान तथा अन्य विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के संदर्भ में अपनी सक्षमता सिद्ध कर रही है। दूरदर्शन–माध्यमों की विभिन्न विधाओं में अपनी विवध प्रयुक्तियों के माध्यम से इसने अपनी जीवंतता और गत्यात्मकता का पूर्ण परिचय दे दिया है, इसमें संदेह नहीं। लेकिन अपने विश्वरूप में यह विविध विचलनों से भी प्रभावित हुई। इसमें सर्वाधिक चिंताजनक बात इसके व्याकरणिक एवं मूल स्वरूप से अत्यधिक विचलित हो जाने का है जो कि इसकी संक्रामक अवस्था का प्रभाव है। सबसे प्रासंगिक तथ्य यह है कि हिन्दी की प्रयोजनमूलकता एवं प्रयोजनीयता विश्वपटल पर स्थापित हो चुकी है। दूरदर्शन–माध्यमों ने ही इसमें अहम भूमिका निभाई है और इसकी वे प्रयुक्तियाँ जो खिचड़ी भाषा का दर्शन कराती हैं वे इसकी अनौपचारिक प्रयुक्तियाँ ही बनी रहेंगी। अपने विविध पारिभाषिक प्रयुक्तियों वाले प्रयोजनों में इसका मूल रूप हिन्दी का है और वही अपने संस्कारित अवतरणों के साथ स्थापित भी होगी। आवश्यकता है तो सिर्फ हिन्दीभाषी और हिन्दुस्तानियों के कृतसंकल्पित होकर हिन्दी के वैश्वीकरण के स्थान पर विश्व के हिन्दीकरण के प्रयास करने की।

संदर्भ ग्रन्थ

1 सिंह, प्रो0 दिलीप : भाषा का संसार, (आधुनिक भाषा की सुगम भुमिका), वाणी प्रकाशन संस्करण–2010,

2 शीतांशु, डा0 पाण्डेय शशिभूषण : शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2007

3 तिवारी, डा0 भोलानाथ : शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन

4 सिंह, डा0 दिलीप : भाषा पत्रिका, नवम्बर–दिसम्बर, 1998,

5 शर्मा, आचार्य देवेन्द्रनाथ/दीप्ति शर्मा : भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2015

6 झा, ज्ञानतोष कुमार : भाषा की राजनीति और राष्ट्रीय अस्मिता, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, संस्करण–2014

7 कुमार; डा0 सुरेश : शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2001

*****